CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

भारतीय सभ्य (नागरिक) समाज : एक कटु यथार्थ

डॉ0 अविनाश शर्मा
डॉ0 गरिमा सिहाग
सहायक आचार्य (लोक प्रशासन)
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज.)
Email-avi147.as@gmail.com, Mob.-9462058197

सारांश

सभ्य (नागरिक) समाज (सिविल सोसायटी) की अवधारणा विविध आयामी यथा–राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, नैतिक एवं आर्थिक इत्यादि संदर्भों में प्रयुक्त की जाती है। तृतीयक क्षेत्रक के रूप में अभिहित सभ्य समाज सनातनकाल अर्थात् प्राचीन रोम एवं यूनान से चला आ रहा है। राजनीतिशास्त्री हीगल वह प्रथम अध्यक्ष थे जिन्होंने सभ्य समाज एवं राज्य के मध्य विभक्तिकरण कर मूल्यांकन किया था। प्रस्तुत शोधपत्र में सभ्य समाज का अर्थ विशेषताएँ, अपेक्षित भूमिका तथा सभ्य समाज का यथार्थ विशेषतः भारतीय संदर्भ में आलेखित किया गया है। इसके अतिरिक्त कतिपय समाज से अपेक्षित चिंतनीय पहलुओं को भी उजागर किये जाने का विनम्र प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : *सभ्य समाज (सिविल सोसायटी), तृतीय क्षेत्रक, भारतीय यथार्थ, सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ आदि।*

प्रस्तावना

सभ्य समाज (सिविल सोसायटी) के सभ्य (सिविल) का शाब्दिक अर्थ नाना अर्थों में प्रयुक्त होता है यथा – देश का नागरिक, असैनिक श्रेणी, दीवानी कानून, भद्रजन, सुसंगठित नागरिक इत्यादि।

इसी क्रम में समाज (सोसायटी) से आशय व्यक्तियों का वह सुसंगठित समूह जो अपनापन, सुनियोजित एवं उद्देश्यपरक सहकारी प्रयत्न तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से ओत–प्रोत हो।

जॉर्ज हगिन्स के कथनानुसार : सभ्य समाज वह सामाजिक स्थल है जो राज्य तथा बाजार से भिन्न क्षेत्र है तथा राज्य के साथ उसके सहसम्बन्ध प्रायः तनावपूर्ण होते है। सभ्य समाज एक संघ के रूप में कार्य करता है।

जैफरी अलैक्जैण्डर – ''राज्य से बाहर संस्थाओं की बहुलता ही सभ्य समाज है।''

इस प्रकार उपर्युक्त भाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सभ्य समाज में विविध संगठन यथा– युवा संघ, कृषक संघ, कार्मिक संघ, श्रमिक संघ, स्वयंसेवी संस्थाएँ, जातीय एवं वर्गीय संगठन, सहकारी समितियाँ, धार्मिक संघ, राजनीतिक दल इत्यादि संस्थाएँ सम्मिलित होती है।

स्थूलतः सभ्य समाज की कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार है :–

1. मानवीय एवं सामाजिक कल्याणकारी कार्यों का संपादन सुनिश्चित करना सभ्य समाज का प्रमुख उद्देश्य है।
2. स्वतंत्र, स्वायत्त एवं उत्तरदायी संगठनों का बोलबाला।
3. मानवाधिकार संरक्षण एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना सुनिश्चित की जाती है।
4. राष्ट्र एवं समाज में संस्कार, मूल्यों, नैतिकता एवं सभ्यता सहित सहकारी भावना को विकसित करना सभ्य समाज का प्रमुख लक्षण है।

शोध के उद्देश्य

1. समाज में सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक एवं नैतिक जागरूकता एवं चेतना उत्पन्न करना।
2. सभ्य समाज के नागरिकों की नीतियों, योजनाओं तथा कानूनों में सहभागिता सुनिश्चित करना।
3. सभ्य समाज का दवाब समूह के रूप में संवेदी एवं पारदर्शी प्रशासन के प्रति चिंतनीय बनाना।
4. मानव एवं सामाजिक कल्याण, लोकहित तथा विश्व बंधुत्व का प्रचार–प्रसार करना।
5. भारतीय समाज के कटु किन्तु वास्तविक यथार्थ को उजागर करना।

प्राक्कल्पना

प्रस्तुत शोधालेख के संदर्भ में शोधार्थी की जो प्राक्कल्पना/परिकल्पना मनोमस्तिष्क में रही है, वह प्रमुखतः शोधार्थी के अनुभव तथा सामान्य सिद्धान्तों पर आधारित है।

1. सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संकट का वैश्विक स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

2. सभ्य समाज रूपी संगठनों को जितनी उत्तम प्रकार की आधारभूत संरचना होगी उतना ही बेहतर कार्य निष्पादन संभव हो सकेगा।
3. सभ्य समाज के उद्देश्यों को सफल क्रियान्विति तभी संभव है जबकि इसे पूर्ण मनोोग से अपनाया जाए।
4. भारतीय समाज का सशक्तिकरण तभी संभव है जबकि प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से कार्य करें।

प्रविधि

उक्त शोध कार्य प्रमुखतः एक अनुभवमूलक एवं मूल्यसमरूप अध्ययन पर आधारित है। यह अनुभवधारित प्राथमिक तथ्यों / ऑकड़ों एवं उपलब्ध प्रकाशित द्वितीयक ऑकडों के आधार पर सम्पन्न किया गया है।

चूंकि आधुनिक समाज के तीन प्रमुखतः क्षेत्र माने गये है। प्रथम सरकार, द्वितीय बाजार एवं तृतीय क्षेत्र के रूप में नागरिक (सभ्य) समाज। चूंकि सभ्य (नागरिक) समाज की राज्य के समग्र विकास एवं कल्याण में महत्ती भूमिका होती है। अतः राज्य एवं सरकार को सभ्य समाज के संगठनों को उचित सम्मान एवं महत्त्व दिया जाना चाहिए।

भारतीय सभ्य (नागरिक) समाज : कटु यथार्थ एवं विचारणीय पहलू

प्रत्येक युग तथा समाज में व्यक्ति अपने परिवार, समाज, राष्ट्र, सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित रहता है। भारत जैसे विविध विकासशील देशों का समाज संक्रमणकाल (ट्रांजिशन) के दौर से गुजर रहा है, जहॉ पर परम्पराओं एवं आधुनिकता के मध्य संघर्ष जारी है। दरअसल भारतीय समाज का अधिकांश भाग सभ्य एवं संस्कारवान नहीं है। जिसकी वजह से नवीन एवं अनावश्यक समस्याओं उठ खड़ी होती है। भारतीय समाज से सम्बन्धित कतिपय कटु यथार्थ के निम्नाकिंत स्वरूप एवं चुनौतियों हमारे सम्मुख विद्यमान है :–

1. स्पष्टवादी एवं ईमानदार व्यक्ति को हम बर्दाश्त नहीं कर पाते है। वास्तविकता यह है कि स्पष्टवादी व्यक्ति चाहे किसी को कितना ही बुरा क्यों न लगे, किन्तु वह छल और कपट से कोसों दूर रहता है।
2. दीपमालिका के शुभअवसर पर विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाता है, साफ–सफाई की जाती है। साफ–सफाई के लिए दीवाली ही क्यों, हर दिन त्योंहार होना चाहिए।
3. सरकार पर अनुचित दबाव डाला जाता है, जिसके लिए सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान, मटका फोड़ प्रदर्शन, पुलिस पर पथराव जैसे अनुचित कार्यों का सहारा लिया जाता है।
4. गंदगी में रहना तथा गंदगी फैलाना हमारा स्वाभाविक चरित्र है। आयोजकों द्वारा कूड़ा–करकट एवं गन्दगी आयोजन स्थल पर ही छोड़ दी जाती है।
5. हम सभी चाहते है कि विधवाओं का पुनर्विवाह हो, वो दुबारा से सुहागन बने, आश्रितों को आश्रय मिले, किन्तु जब हमारा अपना बेटा, अपना साहेबजादा जब किसी विधवा से विवाह करने का प्रस्ताव रखता है तो घर में तूफान जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है।
6. भारतीय समाज द्वारा अपने घर के सम्मुख निर्माण कार्य के उपरांत बीच सड़क पर पत्थर, रोड़ी, लोहा को छोड़ दिया जाता है।
7. सार्वजनिक स्थलों पर लगे होडिंग्स, बैनर पर व्यक्तिगत पोस्टर चिपका दिए जाते है।
8. प्रतिदिन पुलिस थानों में दर्ज केसों में से एक तिहाई केस फर्जी होते है तथा गवाह के बयान परिवर्तित हो जाते है।
9. निर्धारित समय से अधिक देर तक पहुॅचना को सहजता से स्वीकार लिया जाता है।
10. गरीब से लेकर अमीर आदमी तक, निरक्षर से लेकर पढ़े लिखे व्यक्ति तक हर कोई सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करता है। यह अतिक्रमण अपने घर के आस–पास की खाली जगह पर सड़क पर बागवानी से लेकर बड़े–बड़े प्लाट हथियाना या झोपड़ी डालने तक कुछ भी हो सकता है।
11. हम विभिन्न मंदिरों की यात्रा पैदल या पेट के बल लेटकर कर सकते है, हर की पौडी हरिद्वार से कांवड़ ला सकते है, किन्तु घर, दुकान, स्कूल, कॉलेज या ऑफिस के कार्य का बोझ हमसे सहन नहीं हो पाता है।
12. हिन्दु पंचागानुसार श्राद्ध पक्ष में हम अपने उन पूर्वजों को भोजन कराते है, जिन्हें जीते जी प्यार एवं स्नेह के दो पल भी नहीं दे पाए।

सच ही है जिन्दे बाप को कोई ना पूजे, मरे बाद पूजवाया, मुठ्ठी भर चावल देकर के कौवे को बाप बनाया।

निष्कर्ष

वस्तुतः भारतीय प्रशासन के सम्मुख विभिन्न समस्याओं तथा चुनौतियों का अम्बार लगा हुआ है। क्योंकि भारतीय समाज छद्म राष्ट्रप्रेम, ढोंगीपन, अकर्मण्यता, आलस्य, तकदीर में आस्था तथा चोचलों में विश्वास करता है। अतः इसमें अपेक्षित सुधार एवं सकारात्मक मानसिकता को बनाए रखने की आवश्यकता है।

सुप्रसिद्ध अभिप्रेरक शिव खेड़ा ने अपनी पुस्तक ''जीत आपकी'' में लिखा है– देश कभी भी इन छोटे–मोटे चोर–उचक्कों की हरकतों से इतना बर्बाद नहीं हुआ है, देश तभी बर्बाद हुआ है, जब शरीफ और पढ़ा–लिखा आदमी कायर और निकम्मा हो गया है, जिन्हें हम अपने बच्चों का संरक्षक नहीं बना सकते, उन्हें हम देश का नेता क्यों बना देते हैं.... बेवकूफी की हद तक की सहनशीलता इंसानियत नहीं कायरता है... यदि पड़ोसी के यहॉ चोरी हो रही हो और आप चैन की नींद सो रहे है, आप चैन की बंसी बजा रहे हैं तो समझ लीजिएगा – अगला नम्बर आपका।

यदि आप किसी समस्या का समाधान नहीं है तो आप स्वयं ही समस्या है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मोतीलाल गुप्ता – भारतीय समाज, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1997
2. डॉ. सुरेन्द्र कटारिया – मानवाधिकार, सभ्य समाज एवं पुलिस, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, 2003
3. डॉ. सुरेन्द्र कटारिया – सामाजिक प्रशासन, आर.बी. एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, 2013
4. कविराज, सुदीप्ता खिलनानी एवं सुनील (सं.) – सिविल सोसायटी, हिस्ट्री एण्ड पॉसिबिलिटीज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001
5. माइकल एडवर्डस – सिविल सोसायटी, पॉलिटी पब्लिशर्स, 2009
6. माइकल एडवर्डस (सं.) – द आक्सफोर्ड हैण्डबुक्स ऑफ सिविल सोसायटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 2011
7. शिव खेड़ा – जीत आपकी, ब्लूमसबरी पब्लिशिंग इंडिया प्रा. लि., 2011